शिक्षकों में पेशेवर चेतना
एक महती ज़रूरत

जितेन्द्र कुमार लोढ़ा*

इस लेख में शिक्षण पेशे के विकास संबंधी वर्तमान एवं यथार्थ संदर्भों को खंगालने का प्रयास किया गया है, जिसमें शिक्षकों के पेशेवर विकास के मायने, पहलू, मार्ग व अनुभवजनित अवलोकन के निष्कर्षात्मक विशेषण जैसे पक्ष सम्मिलित हैं। इन सभी पक्षों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण पेशे में अधिकांश निवेश शिक्षकों के करियर के शुरू में ही कर दिया जाता है। शिक्षा व उससे संदर्भित उत्पाद, शिक्षकों की गुणवत्ता से अलग कैसे हो सकते हैं? इसलिए शिक्षा व शिक्षक जगत में पेशेवर चेतना की अलख जगाना, वर्तमान के बदलावकारी व गत्यात्मक युग की महती आवश्यकता है, शिक्षकों के पेशेवर विकास की दशा को समझने का यह एक प्रयास है जो यह मानता है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास की धारणा केवल एक घटना भर न होकर, बल्कि एक महत्वगामी प्रक्रम है, जो शिक्षकों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति एवं विकास के साथ-साथ उनकी प्रवृत्तियों व व्यवहारों को सामयिकता के पटल पर प्रबंधित करती है।

विषयपरक पृष्ठभूमि

आज हमारे देश में पेशे एवं नौकरशाहों के लिहाज़ से शिक्षक वर्ग बड़े वर्गों या शायद सबसे बड़े वर्ग के रूप में शुमार है, लेकिन पेशेवर विकास के पायदान पर वह आज भी परंपरागत स्वरूप से जुड़ा हुआ है। सीधी-सी बात है कि विकास एवं गतिशीलता के इस दौर में भी हमारे शिक्षकों में पेशेवर अंदाज़ नहीं है। इसके मूल में कारण चाहे जो भी हो, लेकिन एक बात स्पष्ट है, हमारा शिक्षक, शिक्षण नौकरी का मतलब प्राप्त मशीनी काम व तनख्वाह से समझता है तथा तरक्की का मतलब सिर्फ़ वेतन वृद्धि व पदोन्नति से समझता है। जबकि उसके पेशेवर विकास में उसकी उत्पादक क्षमता, नीतिशास्त्रीय समझ, सामाजिक जागरूकता, सतत सीखना, पहलकदमी, स्वायत्तता, नेतृत्व, सामाजिक प्रतिबद्धता, जवाबदेही समयपरकता एवं हितधारी वर्गों (स्टेक होल्डर्स) की माँगों से अनुकूलन जैसे अनेक मुद्दे भी शामिल हैं, जो आज के शिक्षकों की पेशेवर छवि में प्राय: कम ही परिलक्षित होते हैं। वहीं दूसरी ओर राष्ट्र की वर्तमान शैक्षिक माँगों को देखते हैं तो हमें और भी अधिक शिक्षकों की आवश्यकता है, लिहाज़ा शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण, प्रोत्साहन एवं नौकरी में बनाए रखने

**व्याख्याता-शिक्षा*, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाडेरा, जयपुर, राजस्थान — 303801

की दृष्टि से उनके पेशेवर विकास का चिंतन एवं क्रियान्वयन राष्ट्र को बहुआयामी लाभ देने वाला उपक्रम साबित होगा।

शिक्षक पेशे के वर्तमान परिदृश्य को देखकर लगता है कि आज शिक्षण पेशे में अधिकांश निवेश शिक्षकों के करियर के शुरू में ही कर दिया जाता है, शायद इसलिए डेलर्स कमीशन (1996) की संस्तुतियों में कहा गया है कि, 'वर्तमान समाज के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षक अपने ज्ञान को परिपूर्ण और विकसित बनाएँ। इसके लिए उन्हें सेवा-पूर्व एवं सेवाकाल में अपने पेशे की पूर्णताओं को प्राप्त करने के सतत प्रयास करते रहना चाहिए।' *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005* में भी इस बात को स्वीकारा गया है कि 'शिक्षकों की नियुक्ति, सेवा-पूर्ण प्रशिक्षण, सेवारत प्रशिक्षण तथा कार्य परिस्थितियों से संबंधित नीतियों में 1984 की चट्टोपाध्याय समिति के उन सुझावों की झलक मिलनी चाहिए, जो पेशेवर दक्षता के सुधार के संबंध में दिए गए थे।'

उपर्युक्त संस्तुतियाँ यर्थाथ भी हैं, क्योंकि भूमंडलीकरण के इस वर्तमान युग में जीवन का लगभग हर क्षेत्र प्रतिस्पर्धा एवं गत्यात्मकता से जुड़ गया है, तकनीकी विकास के साथ-साथ संचार एवं सूचना क्रांति के विकास ने शिक्षा व शिक्षण पेशे की नयी माँगों को जन्म दिया है। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की परिवेशिक विशेषताओं में परिवर्तन हुआ है, साथ में ज्ञान निर्माण की धारणा एवं अद्यनता का प्रचलन बढ़ा है। इन सब तथ्यों के चलते विगत कुछ वर्षों से 'शिक्षकों के पेशेवर विकास के दृष्टिकोण' की बातें होना लाज़मी है, यद्यपि शिक्षकों के पेशेवर विकास का अर्थ क्या हो? इसकी दृष्टि फिलहाल अधूरी है, क्योंकि शिक्षण पेशे को पूर्णत: चिकित्सा या वकालत जैसे शास्त्रीय पेशों की श्रेणी में नहीं गिना जा सकता। वह इसलिए कि शिक्षा समाज का विषय है, अत: शिक्षकों के पेशेवर विकास की किसी भी योजना में, उसके भावात्मक व सामाजिक पक्षों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इस वजह से आज आवश्यकता ऐसे पेशेवर शिक्षकों की है जो शिक्षा के सामाजिक सरोकारों को समझते हुए, अपनी शिक्षण शैलियों को, आज के विद्यार्थियों के अधिगम शैलियों के अनुरूप न केवल बनाए रखे, बल्कि इस दिशा में अपनी सचेष्टता एवं विकासात्मकता की दृष्टि को अपने अक्षुण्ण स्वरूप में पूर्ण एवं परिपक्व रखे।

शिक्षकों के पेशेवर विकास की अवधारणा एक बहुआयामी दृष्टिकोण है, जिसमें शिक्षकों की सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ-साथ उनके चयन, प्रशिक्षण, शैक्षणिक विकास, क्षमता निर्माण, निगरानी, आकलन एवं वैधानिकता जैसे अनेक मुद्दे शामिल हैं। ताज़ातरीन शिक्षा का अधिकार अधिनियम—2009 के अध्याय 4 की धारा 23 व 24 में भी शिक्षकों के पेशेवर विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण अपेक्षाएँ रखी हैं, जिसमें सेवा-पूर्व तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण की ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए सतत शिक्षा, सहायता एवं एक ऐसे सामर्थ्यजनक माहौल की बात की गई है, जो उन्हें हमेशा पेशेवर विकास के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित करे। आज शिक्षकों के पेशेवर विकास की दृष्टि से चुनौती यह है कि शिक्षकों के

पेशेवर विकास में क्या कुछ शामिल हो? और दूसरी तरफ़ यह भी स्पष्ट हो कि आज सेवा के कुछ वर्षों बाद पदोन्नति की गारंटी तो है, मगर पेशेवर विकास के अन्य पहलू गौण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) एवं आर्थिक नीति (1991) के चलते भारतीय शिक्षा में आज समता, क्षमता, दक्षता, गुणवत्ता, स्वायत्तता, सबकी भागीदारी, समावेशन, लोचपूर्णता, निजीकरण, वैधानिकीकरण, नवाचार, सूचना एवं संचार तकनीकी के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षक मानक दक्षताओं जैसे मुद्दे प्रचलित हैं। अत: हम कह सकते हैं कि अन्य पेशों की भाँति शिक्षक पेशे की भी अपनी नैतिकता व मूल्य हैं, जिसके केंद्र में उनकी क्षमता व प्रतिबद्धता निहित है। केल्डर हेड़ और डोव्नी ने शिक्षक पेशे की धारणा में अर्जित ज्ञान, उपभोक्ता की सेवा व उसके साथ खास रिश्ता स्थापित करने की प्रवृत्ति, नीति, मूल्यों एवं दिशापरक न्याय के मुद्दों के ज्ञान के साथ राज्य और वाणिज्य के प्रभाव से उसके पेशेवर निर्णयों की स्वतंत्रता जैसे मुद्दों को शामिल किया है। इस दिशा में क्रिस्टोफ़र डे (1999) का यह तर्क भी महत्वपूर्ण है कि 'शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को जीवनपर्यंत चलने वाली गतिविधि के रूप में देखा जाना चाहिए, जो उनके निजी और साथ ही पेशेवर जीवन पर कार्यस्थल की नीति और सामाजिक संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करती है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (2009) एवं (2014) ने सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में परिवर्तन को स्वीकार कर, शिक्षकों के सतत पेशेवर विकास के नेतृत्व एवं कार्यबल के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा कि पेशेवर विकास, व्यावसायिक दक्षता के लिए जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।

इन सभी संदर्भों एवं विवेचन की पृष्ठभूमि से एक ही तथ्य उभरकर आता है कि गति व बदलाव के इस दौर में शिक्षकों में पेशेवर अंदाज़ का होना आज की महती एवं अधिष्ठापन माँग है, जो एक ओर उनकी सतत क्षमता एवं प्रतिबद्धता को केंद्र में रखकर, दूसरी ओर संबंधित सामाजिक संदर्भों एवं मूल्यों की प्रबल पक्षपाती बन जाती है। अत: शिक्षा व शिक्षक जगत में पेशेवर चेतना की अलख जगाना, एक समसामयिक उपक्रम है। जिससे शिक्षकों का न केवल अर्थ पक्ष मज़बूत होगा, बल्कि उनके आत्मसम्मान को भी हमेशा उच्च दिशा मिलती रहेगी।

पेशेवर विकास के मायने

एक शिक्षक के पेशेवर विकास में विषय-वस्तु, कक्षा, स्कूल एवं समाज की ज़रूरतें होती हैं। यह सच है कि शिक्षण पेशे में आने से पूर्व दीर्घकालीन अधिगम प्रक्रिया से गुज़रकर विशिष्ट ज्ञान, प्रशिक्षण और कार्यानुभव अर्जित किया जाता है, साथ में यह भी सत्य है कि आर्थिक प्रतिफल के बदले में शिक्षण पेशा वैयक्तिक एवं सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। हमें यहाँ यह समझना होगा कि शिक्षण पेशे में एक पेशे के सभी सामान्य लक्षण होते हुए भी उसे अन्य शास्त्रीय पेशों के समकक्ष नहीं रखा जा सकता, क्योंकि शिक्षण एक विशिष्ठ व अनूठा पेशा है, जिसकी कुछ निजी विशेषताएँ हैं, जिसके चलते हम इसे पूर्ण पेशे की परिधि में नहीं रख सकते। व्यवहार में शिक्षण एक वेतन भोगी वृत्ति समूह है, जो पूर्व-निर्धारित पाठ्यक्रमों को कक्षाओं में पढ़ाता है। अध्यापन व

मूल्यांकन के अलावा इस दिशा के अन्य नियम उसे बने-बनाए मिलते हैं। प्रायः शिक्षण वृत्ति में शिक्षक सामूहिक तौर पर अंतर्क्रिया करता है, अत: उसकी गुणवत्ता का आकलन भी कठिन है, साथ में यह भी तय करना दुरूह कार्य है कि किसी शिक्षक का उसके विद्यार्थियों के समग्र विकास पर कितना व कितनी दूर तक प्रभाव पड़ा?

वर्तमान के प्रचलित शिक्षण पेशे में, पेशेवर विकास की प्रक्रिया के अंतर्गत समग्र व सतत धारा का दृष्टिकोण नहीं दिखाई देता । शिक्षण वृत्ति के विकास के अधिकांश मार्ग यंत्रवत व संवाद रहित हैं, इन सबके चलते शिक्षकों में पेशवर विकास का पहलू कमज़ोर है, अत: इस कारण आज के बदलते परिवेश में शिक्षकों के पेशेवर विकास में परिवर्तन की धारणा बलवत हो चली है। इस दिशा में लिबरमैन और मिलर (2009) का यह मॉडल अनुकरणीय है

वर्तमान परिवेश को देखकर अब पुष्ट रूप से लगता है कि शिक्षण पेशे में भी 'पेशवर संस्कृति' का विकास हो, लिहाज़ा आज के शिक्षकों में स्व-मूल्यांकन एवं आत्म-आलोचना का दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है, ताकि उनमें अपने पेश के मानक व नीतिशास्त्रीय समझ पैदा हो सके, जिसके चलते हमारे शिक्षक बंधु, अपने आपको सिर्फ़ वेतन व पदोन्नति के नज़रिये से न देखकर, पेशेवर क्षमता एवं प्रतिबद्धताओं के नज़रिये से देख सकें। आज शिक्षा में बाज़ारीकरण, *होम स्कूलिंग, लर्निंग ऑल द टाइम*

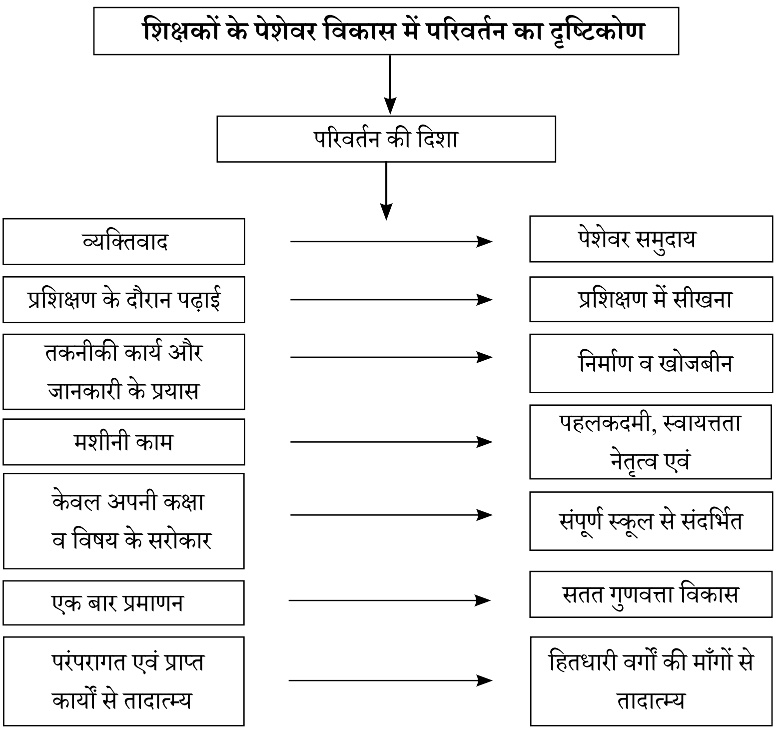

जैसी अनेक समकक्ष अवधारणाएँ शिक्षण को पूर्ण पेशा बनाने का प्रबल समर्थन कर रही हैं तो वहीं दूसरी ओर *कॉमन स्कूल सिस्टम*, शिक्षा अधिकार, शिक्षा सबके लिए एवं राष्ट्रीय दक्षताओं जैसी अवधारणाएँ शिक्षा के सामाजिक सरोकारों पर बल देती हैं, अत: शिक्षण वृत्ति का पेशेवर दृष्टिकोण आज राष्ट्रीय व सामाजिक प्रतिबद्धताओं तथा वैयक्तिक आर्थिक लाभों एवं विकासों के मध्य संतुलन का हिमायती है।

शिक्षा में वैश्वीकरण, निजीकरण एवं तकनीकीकरण की अवधारणाएँ इसी ओर इशारा कर रही हैं, फिर भी पेशेवर धारणा के इस प्रवाह में हमें शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पहलुओं को भी ध्यान में रखना होगा, क्योंकि अंततोगत्वा शिक्षण एक मिशन है, अत: शिक्षण को एक पेशे के रूप में विकसित करने के उत्साह में हमें उसकी सामाजिक प्रतिबद्धताओं वाले अनिवार्य पक्ष को विस्मृत नहीं होने देना है। आज भी शिक्षकों के कंधों पर अनेक सामाजिक दायित्वों का भार है, वह इसकी अनदेखी भी नहीं कर सकते। वैसे भी अगर देखा जाए तो सही व सम्यक मायने में 'विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास' ही शिक्षकों का प्रमुख पेशा है, इसलिए शिक्षकों के पेशेवर विकास की कोई भी योजना विद्यार्थियों के संदर्भ से परे हो ही नहीं सकती, अत: विद्यार्थियों की संतुष्टि व विकास का स्तर ही, शिक्षकों के पेशेवर विकास की सफलता का सबसे नज़दीकी व प्रत्यक्ष कसौटी है।

पेशेवर विकास के पहलू

जब एक शिक्षक अपने पेशे के आवश्यक गुणों को वर्तमान व गत्यात्मक समाज की आवश्यकता के आधार पर विकसित एवं परिपूर्ण करे, साथ में अपने पेशे की अंतरात्मा व समझ को, बहुआयामी स्वरूप में विकसित करे, तब जाकर कहीं वह वर्तमान समाज की माँगों के आधार पर, शिक्षण प्रक्रिया में अच्छे ढंग से समायोजित हो पाएगा। इस प्रकार की अनवरत परिस्थितियों का, समग्र शिक्षकों के संदर्भ में, व्याप्त हो जाने के दृष्टिकोण को हम पेशेवर विकास की संज्ञा दे सकते हैं। इस संबंध में वयस्क एवं सतत शिक्षा के शब्दकोश (1996) में कहा गया है कि पेशेवर व्यक्ति के संगठन में अच्छे प्रयोग के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण एवं अभिवृत्तियों को वर्तमान के आधार पर विकसित करना ही, उसका पेशेवर विकास है। चिंतन की इस धारा से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास के अनेक पहलू हैं, जिनको वरण किए बिना शिक्षकों का वृत्तिक विकास संभव नहीं है, वैसे भी 'पहलू' का मतलब पक्ष से होता है अर्थात् इन पक्षों की पहल व समावेशन करके ही शिक्षकों में पेशेवर विकास का शंखनाद कर सकते हैं, जिसकी बानगी आगे के चित्र से स्पष्ट है।

शिक्षकों के वृत्ति विकास के विविध पक्ष

शिक्षकों के पेशेवर विकास के इन पहलुओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि पेशेवर विकास की अवधारणा में संगत श्रृंखला, संरचना, संबद्धता एवं सतत धारा जैसे गुण आवश्यक व अपेक्षित हैं, अत: इस संदर्भ में शिक्षा संस्थानों में सतत सीखने के अवसर, सामर्थ्यजनक एवं प्रोत्साही परिवेश, पेशेवर विकास के पथ, नेतृत्व के अवसर, स्वायत्तता एवं तंत्र पारदर्शिता के साथ-साथ विधि सहसंबंधित

पक्षकारों से अंतर्क्रिया के अवसर हर समय उपलब्ध रहने चाहिए, तब जाकर शिक्षक अपने पेशेवर विकास के सूचकों को न केवल समझ पाएँगे, बल्कि उन्हें अंगीकार कर, अपनी छवि को एक वृत्तिवान स्वरूप में तराश सकेंगे। पेशेवर स्तर को मानकोनुकूल बनाए रखने के लिए आज शिक्षक समाज में एक 'पेशेवर संस्कृति' को सृजित करने की ज़रूरत है, इसके लिए पेशेवर विकास के विविध पक्षों को व्यापक पैमाने पर प्रसारित कर, सतत व अक्षुण्ण स्वरूप में पेशेवर विकास का एक व्यापक व सुपरिभाषित कार्यक्रम विकसित करना चाहिए, तब जाकर कहीं हमारा शिक्षक समुदाय अद्यतन व समकालीन हो पाएगा।

पेशेवर विकास के मुख्य पथ

प्रत्येक पेशे में विकास के अनवरत पथ होते हैं, जिन पर संचलन कर पेशेवर व्यक्ति अपनी व संगठन की सफलता के आधार निर्मित करता है। शिक्षण पेशा ही क्या, कोई भी पेशा, बिना सतत शिक्षा, प्रशिक्षण एवं सीखने के अवसरों की उपलब्धता की स्थायी सफलता अर्जित नहीं कर सकता, क्योंकि इन प्रक्रमों के अभाव में अनुभव निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं होगी। इसलिए आज की बुनियादी ज़रूरत यह है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए न केवल उनके स्वयं के आत्म-निर्देशित क्रियाकलापों को प्रोत्साहित किया जाए, बल्कि उनके लिए अनवरत शिक्षा और प्रशिक्षण के पथों को भी प्रबंधित व विकसित किया

शिक्षकों के पेशेवर विकास के विविध पक्ष

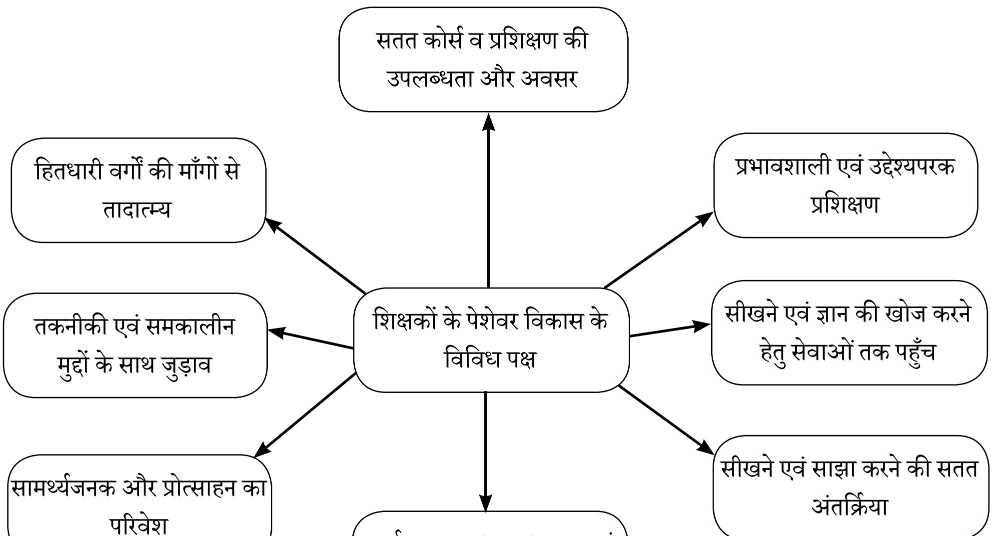

जाए। चूँकि शिक्षण पेशे की सफलता का मानदंड उसकी गुणवत्तापरक दक्षता है। प्रकाश और सुमित्रा चौधरी (1994) के विश्लेषणात्मक अध्ययन, *एक्सपेंडिचर ऑन एजुकेशन— थ्योरी, मॉडल्स एंड ग्रोथ* से पता चलता है कि शिक्षकों की उत्पादकता (भारत के संदर्भ में) 30.91 है, जो औसत और सीमांत उत्पादकता से थोड़ी अधिक है, शिक्षक उत्पादकता के इस निष्कर्ष को देखते हुए उन्होंने शिक्षकों के पेशेवर विकास की प्रबल सिफ़ारिश करते हुए कहा कि संपूर्ण गुणवत्तापरक दक्षता निर्माण की दृष्टि से शिक्षकों के लिए सतत विकास व सीखने के अवसरों को प्रबंधित किया जाए।

वर्तमान परिवेश के अनुकूलन स्तर को प्राप्त करने के लिहाज़ से शिक्षण पेशे में पूर्णता के पंख लगाने हेतु, हमें शिक्षकों के निर्धारित, आवश्यक एवं अखंडित पथों को प्रबंधित करना होगा। शिक्षक सदैव आगे बढ़ें, इसके लिए हमें उनकी विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दूर कर, उनके लिए खुशनुमा व विकासगामी मार्गों को तलाशना होगा, तब ही जाकर आज का शिक्षक अपनी वृत्ति की दृष्टि से पूर्ण निष्ठावान व फलदायी इकाई बन पाएगा। अपने पेशेवर विकास के लिए शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, भौतिक, भाषाई, जेंडर एवं तकनीकी पक्षों की चिंताओं एवं हीन भावनाओं से मुक्त होकर, लगातार सीखने की ओर प्रवृत्त होना होगा, साथ ही उन्हें अपने ज़मीनी स्तर के पूर्वाग्रहों व प्रतिष्ठा के मुद्दों से ऊपर उठकर, अपने पेशेवर मर्मों को केंद्र में रखकर, अपने निजी विकास और आत्म-छवि को प्रबल बनाना होगा, तब जाकर कहीं शिक्षक समुदाय में पेशेवर संस्कृति का वांछित

शिक्षकों के पेशेवर विकास के राजमार्ग

वृत्तिका-विकास के सतत अवसर एवं स्रोत	
स्वयं द्वारा आत्म-निर्देशित स्रोत	***सामूहिक सहभागिता आधारित नियोजित अवसर***
• समकक्ष लोगों के साथ अंतर्क्रिया व साझेदारी • सतत अध्ययन व लेखन • बदलते शैक्षिक संदर्भों के प्रति जागरूकता • समय-समय पर आत्म-निरीक्षण व आकलन • कार्यशालाओं व संगोष्ठियों में सहभागिता • नेटवर्क लर्निंग व इंटरनेट का वृत्तिक प्रयोग • हितधारी वर्गों (स्टेक होल्डर्स) की माँगों के प्रति संवेदनशीलता • शिक्षण वृत्ति के मानक मूल्यों व राष्ट्रीय अपेक्षाओं का सतत मान व ज्ञान • आलोचनात्मक खोजबीन • बदलाव के प्रति सकारात्मकता • स्वाध्याय व सूचना स्रोतों से सतत जुड़ाव, सृजनात्मकता को समर्थन	• अभिविन्यास पाठ्यक्रम • पुनश्चर्या पाठ्यक्रम • शिक्षा व शिक्षण से संबंधित विशेष कोर्स • दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रमों में सहभागिता • सेवारत प्रशिक्षण शिविर • केंद्र व राज्यों के प्रशिक्षण अभिकरणों के कार्यक्रमों में सहभागिता • वृत्तिक संघों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता • शिक्षा बोर्ड एवं विश्वविद्यालयों के अकादमिक प्रशिक्षण केंद्रों के प्रोग्राम में सहभागिता • सामयिक शैक्षिक जन कार्यक्रमों के प्रशिक्षण शिविरों में सहभागिता

विकास हो पाएगा। इस दृष्टि से आगे दिए हुए चित्र के अनुसार वृत्तिक विकास के राजमार्गों को दिशा देनी होगी, जो कि एक आवश्यक प्रक्रम है —

शिक्षकों में पेशेवर विकास के लिहाज़ से उक्त स्रोतों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर एक ऐसे परिवेश को जन्म देना, जिससे प्रत्येक शिक्षक में दक्षता, हुनर, ज्ञान एवं आत्मविश्वास का स्तर इस स्तर तक बढ़ जाए कि वह निष्क्रिय ग्रहणकर्ता के स्थान पर सक्रिय सहभागी बन जाए। इस निमित्त शिक्षण संस्थानों में ऐसी गतिशील व्यवस्था प्रबंधित हो, जो विकास के विविध मार्गों के साथ मूल्यांकन व पृष्ठपोषण की विभिन्न प्रक्रियाओं को एक सतत स्वरूप प्रदान करे। स्पष्ट है कि इस प्रकार की गतिविधियों के कारण शिक्षकों में पेशेवर परिपक्वता के साथ सभ्यताकारी दृष्टिकोण विकसित होंगे। इस तथ्य की पुष्टि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व अन्य संगठनों द्वारा 'भारतीय शिक्षा की गुणवत्ता' पर कराए गए अध्ययनों के निष्कर्षों से भी होती कि 'शिक्षकों के पेशेवर विकास की दृष्टि से प्रबंधित सतत शिक्षा व प्रशिक्षण स्तर, विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को प्रभावित करते हैं, जो कि सकारात्मक साक्ष्यों के मान से प्रबंधित थे।' सार मंतव्य यह है कि शिक्षकों को अपने शिक्षकत्व को बनाए रखने के लिए, अपने पेशेवर विकास के राजमार्गों पर सतत चहलकदमी करनी होगी, तब जाकर उनका पेशा एक समाजोपयोगी उपागम बन पाएगा।

पेशेवर विकास के प्रमुख अवलोकन

शिक्षकों के पेशेवर विकास के समग्र कार्यक्रमों में ज्ञान-विज्ञान, सतत व सहज सीखना, पारदर्शिता, स्वायत्तता एवं जवाबदेही जैसे घटक शामिल होने चाहिए। जिसके आलोक में शिक्षक बंधु स्वप्रेरित ज़िम्मेदारी का अहसास करते हुए, समाज को आवश्यक सेवार्थी प्रदान करते रहें। विचार दर्शन की इस धारा से स्पष्ट है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास के कुछ निजी मुद्दे हैं, जिनका समाधान किए बिना शिक्षकों का पेशेवर विकास असंभव तो नहीं, लेकिन कठिन अवश्य है। इस दिशा के कुछ अनुभवजनित मुद्दों का परिचय इस प्रकार है—

- पेशेवर विकास कार्यक्रम के तहत शिक्षकों की वेशभूषा, हाव-भाव, वाणी की स्पष्टता, वाक्पटुता, विषयानुकूल भाषा व शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ सामान्य आदतें शिक्षण पेशे की छवि के अनुकूल होनी चाहिए।
- शिक्षकों के पेशेवर विकास के कार्यक्रमों में शिक्षकों की उपस्थिति व समयबद्धता का दृष्टिकोण पूर्ण परिपक्वता एवं वरीयता लिए हुए होना चाहिए।
- पेशेवर विकास की दृष्टि से शिक्षकों में अपनी वृत्ति के प्रति उत्साह, गर्व एवं प्रतिबद्धता का स्वरूप सदैव उच्च कोटी का रहना चाहिए।
- शिक्षक पेशे में अवकाश की बाहुल्यता रहती है, अत: अवकाश का प्रयोग पेशेवर विकास की धारणा से किया जाए।
- शिक्षकों के पेशेवर विकास के कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के समग्र संदर्भों की समझ अवश्य समावेशित करनी चाहिए।
- विद्यालयों के परिवेश में पेशेवर विकास के मार्ग एवं स्रोतों के प्रति जागरूकता व पहलपन के

दृष्टिकोण को सतत स्वरूप में प्रबंधित करते रहना चाहिए।

- शिक्षण वृत्ति विकास के निर्देशनीय उपागमों को शैक्षिक संस्थान के तंत्रगम स्वरूप में प्रभावी व पहल दृष्टि से विकसित व प्रबंधित करना चाहिए।
- संस्थान में ऐसे सभी विमर्शों का सतत प्रसार एवं प्रबंधन करना चाहिए, जो शिक्षकों में सक्रियता एवं परस्पर सहयोग व निर्भरता का वातावरण पैदा करे।
- शैक्षिक संस्थानों में सूचना व संप्रेषण तकनीकी के साथ वृत्तिक विकास के मार्ग व अनुभवों को साझा करने वाली प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिले।
- यह देखना है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास के कार्यक्रम, शिक्षकों की राष्ट्रीय दक्षताओं से तादात्म्य लिए हुए हैं या नहीं।
- यह देखना कि हमारे पेशेवर विकास कार्यक्रमों से शिक्षकगण स्वयं को गौरवांवित, ज़िम्मेदार एवं स्वायत्त स्वरूप में महसूस कर रहे हैं या नहीं।
- पेशेवर शिक्षकों का संबंध संपूर्ण विद्यालय या तंत्र के साथ होना चाहिए, न कि एक कक्षा या एक विषय विशेष के साथ।
- पेशेवर शिक्षकों के लिए विद्यालयों की विविधता एक उत्सव होनी चाहिए, न कि भार।
- संस्थान के परिवेश में शिक्षण पेशे की संस्कृति व नीतिशास्त्र की समझ एवं सम्मान का दृष्टिकोण हमेशा परिलक्षित होना चाहिए।
- शिक्षकगण, शिक्षा के बहुआयामी उत्पादकीय कार्यों का महत्व समझें तथा अपने पेशे के समस्त कार्यों को शिक्षण का माध्यम बनाएँ।
- शिक्षण वृत्ति के समस्त कार्यों की केंद्रीय धुरी हितधारी वर्गों की आशा व आकांक्षा होनी चाहिए।
- शिक्षण वृत्ति संघों का नज़रिया दलगत राजनीति से परे हटकर, शिक्षकों के वृत्तिक विकास पर केंद्रित होना चाहिए।
- शिक्षकगण, समाज व अपनी वृत्ति के प्रति सजगता दिखाते हुए, अपने दायित्वों को केंद्र में रखकर बेहतर विश्व के लिए कार्य करें।
- शिक्षकों के पेशेवर विकास कार्यक्रमों में नवाचार, अनुसंधान, परिवर्तनशीलता, कार्य संस्कृति, टीम वर्क एवं सामयिक माँगों को उचित समर्थन व प्रबल स्थान मिलना चाहिए।

उक्त सभी अवलोकनीय बिंदुओं की रोशनी से साफ़ झलकता है कि शिक्षकों का पेशेवर विकास वर्तमान युग की एक महती ज़रूरत है, इसके अभाव में हमें शिक्षक तो मिल जाएँगे, लेकिन उनका शिक्षकत्व नहीं मिल पाएगा।

निष्कर्ष

शिक्षा राष्ट्र के विकास में एक विशिष्ट उत्पादनीय सेवा है, वह इसलिए कि शैक्षिक उत्पादों की गुणवत्ता पर ही संपूर्ण राष्ट्र का उत्पादकीय ढाँचा व उसका स्वरूप निर्भर करता है। किसी भी उत्पादन की गुणवत्ता का स्तर, उसके उत्पत्ति के साधन से परे हो ही नहीं सकता, अत: स्पष्ट है कि शिक्षा व उससे संदर्भित उत्पाद, शिक्षकों की गुणवत्ता के फलन हैं और शिक्षकों की गुणवत्ता उसके पेशेवर विकास के नज़रिये पर निर्भर करती है। इसके साथ-साथ आज शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने की माँग, बाज़ारीकरण, राष्ट्रीय दक्षता, प्रतिस्पर्धा

एवं भूमंडलीकरण जैसे अनेक सरोकार, इस धारणा को और भी अधिक महत्वपूर्ण व प्रभावी बना रहे हैं। इसलिए शिक्षकों के पेशेवर विकास की प्रक्रिया एक तरफ़ तो बाज़ारिक व सामायिक दृष्टिकोण की कसौटियों पर आधारित होनी चाहिए, तो वहीं दूसरी ओर इसे राष्ट्रीय एवं सामाजिक दायित्वों व अपेक्षाओं से अनुकूलित होना चाहिए। तब जाकर सही मायने में शिक्षकों के पेशेवर विकास की धारणा का उदय हो पाएगा।

इस प्रकार शिक्षकों की वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताओं को देखते हुए, यह स्वयं में सिद्ध है कि शिक्षकों में पेशेवर चेतना का होना, आज के दूरगामी, परिवर्तनशील एवं तकनीकी से परिपूर्ण समाज की एक महती माँग है। इस संबंध में शिक्षा आयोग (1964–66), शिक्षक शिक्षा पर गठित राष्ट्रीय आयोग (1983–85), *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* (1986), राममूर्ति समिति (1990), राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2005), *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— 2005*, शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) के साथ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) की लगभग सभी घोषणाओं आदि ने शिक्षकों के पेशेवर विकास की दृष्टि से सेवा-पूर्व व सेवाकालीन सतत शिक्षा एवं प्रशिक्षणों के सतत आयोजनों की सिफ़ारिश के साथ शिक्षकों की समकालीन आवश्यकताओं के आधार पर रिफ्रेशर कोर्सेज़, प्रशिक्षण संस्थान, मिलन मंच, शिक्षावकाश, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं दिशापरक *फ़ॉलो-अप* गतिविधियों के प्रावधानों पर बल दिया है। इन सारे संदर्भों व विवेचनाओं से यह तथ्य पुष्ट होता है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास की अवधारणा एक घटना भर न होकर, एक आवश्यकता आधारित प्रक्रम है, जो शिक्षकों के ज्ञान, विकास, कौशल, दृष्टिकोण, अभिवृत्ति व उनकी प्रवृत्तियों एवं व्यवहारों को सामायिकता के पटल पर प्रबंधित करती है।

संदर्भ

गर्ग, पी.पी. 1995. शिक्षा में आर्थिक विचारधारा, क्षमता, दक्षता और गुणवत्ता के प्रश्न. *परिप्रेक्ष्य*. न्यूपा, नयी दिल्ली. वर्ष 2, अंक 1, अप्रैल 1995. पृ. 61.

तिवारी, शंकर प्रसाद. 2011. भारत के शैक्षिक सुधारों हेतु गठित प्रमुख आयोग/समितियाँ. *प्रतियोगिता दर्पण*. जनवरी 2011, आगरा (उ.प्र.). पृ.1081–1085.

न्यूपा. 2007. होम स्कूलिंग— एक बेहतर विकल्प एवं जॉन हॉल्ट का शिक्षा दर्शन. *परिप्रेक्ष्य*. रा.शै.यो.प्रा. विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली. पृ. 83–90 एवं 133–140.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. *प्रारंभिक शिक्षकों के सेवाकालीन विकास के मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट*. भुवनेश्वर, उड़ीसा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय. नयी दिल्ली.

राजस्थान बोर्ड. 2011. शिक्षा का अधिकार—2009. *राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका*. अजमेर. पृ.सं. 2.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली. पृ.115.

लोढ़ा, जितेन्द्र. 2005. शैक्षिक प्रशासन एवं गुणात्मक शिक्षा की सफलता का मुख्य आधार — शिक्षकों का वृत्तिक विकास. *नया शिक्षक*. मा.शि. निदेशालय, बीकानेर, राजस्थान. पृ. 53.

शर्मा, भानु. 2001. शिक्षकों का वृत्तिक विकास. *विद्यामेघ मासिक पत्रिका*. मेरठ, अंक 56, वर्ष 7, अक्तूबर 2001. पृ. 58.

श्री प्रकाश और सुमित्र चौधरी. 1994. *एक्सपेंडिचर ऑफ़ एजुकेशन— थ्योरी, मॉडल्स एंड ग्रोथ*. न्यूपा, नयी दिल्ली. पृ. 310.

सिंह, ब्रिजेश. 2018. पेशेवर शिक्षक के मायने क्या हैं? *एजुकेशन मिरर*. 26 मई, 2018.

सिन्हा, शरद और जितेन्द्र कुमार लोढ़ा. 2009. शैक्षिक उत्कर्ष के लिए गुणवत्ता में सुधार की लक्ष्यपरक प्रक्रिया. *परिप्रेक्ष्य*. न्यूपा, नयी दिल्ली. वर्ष 16, अंक 1, अप्रैल 2009. पृ.27.